वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :2 अंक : 316 | गुरुवार 16 मार्च 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री ने किया प्रस्ताव का अनुमोदन

प्रदेश की 30 हजार छात्राओं को मिलेगी स्कूटी

छात्राओं को ई-स्कूटी का भी विकल्प

जयपुर. कासं। राज्य सरकार छात्राओं के सशक्तिकरण एवं उनको उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अहम निर्णय ले रही है। अब प्रदेश की 30 हजार मेधावी छात्राओं को स्कूटियां वितरित की जाएंगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने स्कूटियों की संख्या 20 हजार से बढ़ाकर 30 हजार करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना एवं देवनारायण स्कूटी योजना में मेधावी छात्राओं को अब इलेक्ट्रिक स्कूटी लेने का भी विकल्प मिलेगा। छात्राएं ऑनलाईन आवेदन के समय विकल्प ले सकती हैं। योजनान्तर्गत यदि सभी छात्राएं ई-स्कूटी के लिए आवेदन करती हैं तो राज्य सरकार 390 करोड़ रुपए व्यय करेगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2023-24 के बजट में मेधावी छात्राओं के लिए स्कूटियों की संख्या को 20 हजार से बढ़ाकर 30 हजार किए जाने की घोषणा की गई थी।

बारिश के बाद मौसम में बदलाव...

अगले तीन दिन के लिए भी राजस्थान के कई शहरों के लिए विभाग ने हल्की से तेज बारिश और ओले गिरने का अलर्ट जारी किया है।

जयपुर. कासं

राजस्थान के पूर्वी हिस्से में गरज-चमक के साथ हुई बारिश से मौसम बदल गया। मौसम के इस बदलाव से शहरों में दिन और रात में तापमान में मामूली गिरावट हुई। आज भी सिरोही, जालोर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, उदयपुर, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और अजमेर के कुछ हिस्सों में बारिश हो सकती है। अगले तीन दिन के लिए भी राजस्थान के कई शहरों के लिए विभाग ने हल्की से तेज बारिश और ओले गिरने का अलर्ट जारी किया है। वहीं, मौसम विशेषज्ञों ने इस सिस्टम का असर 19 मार्च तक राजस्थान में रहने की संभावना जताई है। पाकिस्तान में बना एक साइक्लोनिक सकुर्लेशन राजस्थान में बदले मौसम का कारण बताया जा रहा है। मंगलवार देर शाम को पूर्वी राजस्थान में अलवर, दौसा, जयपुर, भरतपुर, धौलपुर में कई जगहों पर हल्की से मध्यम बारिश हुई। अलवर के राजगढ़ में 5एमएम, दौसा जिले के सिकराय में 6, मंडावर-बसवा में 4-4, सैंथल 3 और भरतपुर-धौलपुर में 5-5एमएम बारिश हुई।

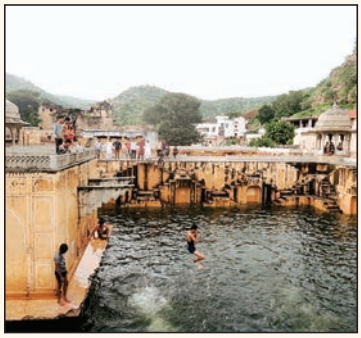

भरतपुर-धौलपुर में देर शाम बारिश के साथ तेज हवाएं भी चली। जयपुर में भी देर शाम मौसम में बदलाव हुआ और आसमान में बादल छाने के बाद हल्की बूंदाबांदी हुई। उत्तर भारत में एक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस एक्टिव हो रहा है। इसी तरह मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात सीमा के पास एक साइक्लोनिक सकुर्लेशन बना हुआ है। इसके अलावा पाकिस्तान में कराची के आसपास एक भी साइक्लोनिक सकुर्लेशन बना हुआ है। इन सिस्टम के कारण राजस्थान, गुजरात, एमपी, महाराष्ट्र में अरब सागर से मॉइश्चर मिल रहा है। इन सिस्टम के कारण भारत के कई राज्यों में आज से वेदर एक्टिविटी शुरू होगी। 16 मार्च को बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, पाली, राजसमंद, अजमेर, टोंक, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, बारां, कोटा, बूंदी और अजमेर में गरज चमक के साथ बारिश और कहीं-कहीं ओले गिर सकते है। 17 मार्च को गंगानगर हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, सिरोही, उदयपुर, पाली, राजसमंद,चूरू, झुंझुनूं, सीकर, जयपुर, अलवर, दौसा, भरतपुर, करौली, धौलपुर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, बारां, कोटा, बूंदी में बारिश हो सकती है। वहीं, अजमेर, पाली, भीलवाड़ा और नागौर में तेज स्पीड से हवाएं भी चल सकती है। 18 मार्च को जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं, सीकर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा, जयपुर, पाली, अजमेर, बारां, बूंदी, कोटा, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, टोंक, सवाई माधोपुर, करौली में बारिश होने के साथ कुछ जगहों पर ओले गिर सकते है।

कांग्रेस के खिलाफ 33 जिलों में महाघेराव करेगी भाजपा

16 मार्च से 5 अप्रैल तक होगी जन-आक्रोश सभा, सतीश पूनिया भरतपुर से करेंगे शुरूआत

जयपुर. कासं

राजस्थान में चुनावी साल में कांग्रेस सरकार के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर प्रदेशभर में आंदोलन करने जा रही है। 16 मार्च से 5 अप्रैल तक बीजेपी की ओर से प्रदेश के 33 जिलों में जन आक्रोश सभाओं का आयोजन किया जाएगा। जिसमें बीजेपी के कार्यकर्ता जिला स्तर पर सभा का आयोजन कर कलेक्ट्रेट का घेराव करेंगे। गुरुवार को इसकी शुरूआत राजस्थान के भरतपुर से होगी। जहां बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया समेत बीजेपी के आला नेता कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोलेंगे। राजस्थान भाजपा कांग्रेस सरकार के खिलाफ 16 मार्च (कल गुरुवार) से जनाक्रोश हल्ला बोल प्रदर्शन करने जा रही है। जिसके तहत किसान कर्जमाफी, पेपर लीक, बिगड़ी कानून व्यवस्था, महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध जैसे मुददों को लेकर बीजेपी 16 मार्च

से 5 अप्रैल तक प्रदेशयभर के सभी 33 जिलों में जन आक्रोश सभाओं का आयोजन करेगा। इसके साथ ही 33 जिला मुख्यालयों पर जनसभा के साथ ही जिला कलेक्ट्रेट का घेराव किया जायगा। इससे पहले भी राजस्थान बीजेपी की और से कांग्रेस सरकार के खिलाफ प्रदेशभर में जन आक्रोश रथ यात्रा निकाली गई थी। जिसमें बीजेपी के जन आक्रोश रथ पर निकले कार्यकर्ताओं ने जनता से शिकायतें इकट्ठा की थी। इसके साथ ही विधानसभा स्टार पर जन आक्रोश सभा का आयोजन भी किया गया था। ऐसे में चुनावी साल में सरकार को घेरने के लिए बीजेपी एक बार फिर जनता में आक्रोश पैदा करने के लिए प्रदेशभर में

> राजस्थान भाजपा कांग्रेस सरकार के खिलाफ आज से जनाक्रोश हल्ला बोल प्रदर्शन करने जा रही है।

आंदोलन करने जा रही है। इस दौरान जन आक्रोश महाघेराव में बीजेपी के सांसद, विधायक, प्रदेश और जिले के स्थानीय पदाधिकारी, कार्यकर्ता के साथ आम जनता मौजूद रहेगी ,और आमजन शामिल होंगे।

आज जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जन्म कल्याणक एवं तप कल्याणक महोत्सव

1)आदिनाथ द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं पूर्ति प्रणाली का ज्ञान

2)इस देश का नाम भारत, आदिनाथ के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम पर

3)अपनी सुपुत्रियो के माध्यम से लिपि एवं अंक ज्ञान

4) नियमानुसार एवं व्यवस्थित जीवन यापन का ज्ञान

वर्तमान में इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल का संचार हो रहा है। आदिनाथ भगवान इस काल के प्रथम तीर्थंकर है जिनका जन्म भारत भूमि में हुआ था। इनको वृषभदेव तथा ऋषभदेव के नाम से भी जाना जाता है। भगवान ऋषभनाथ का जन्म भारत के पावन शहर अयोध्या की भूमि पर हुआ था। वही अयोध्या भूमि जहाँ मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या के गर्भ से जन्म लिया था। आदिनाथ का जन्म चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को उत्तरषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था। जैन धर्म के अनुसार यह तृतीय काल था। इनका जन्म इश्वाकु वंश में हुआ था।आदिनाथ के पिता का नाम राजा नाभिराज था जो अयोध्या के राजा थे एवं माता का नाम मरूदेवी था। आदिनाथ के यशस्वती तथा सुनंदा के साथ विवाह हुआ था। यशस्वती से उन्हें 99 पुत्र (चक्रवर्ती राजा भरत सहित) तथा एक पुत्री ब्राह्मी हुए थे। सुनंदा से उन्हें एक पुत्र बाहुबली तथा एक पुत्री सुंदरी हुए थे। स्वयं के मुनि बन जाने के बाद उन्होंने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा घोषित कर दिया था और बाकि पुत्रों में भारत के अन्य राज्य बाँट दिए थे। चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा था। भगवान आदिनाथ के कई अन्य नाम ऋषभदेव /ऋषभनाथ, वृषभनाथ, नाभिया, आदिपुरुष, आदिब्रह्मा, प्रजापति कहा गया। इसके अलावा उन्हें पुरुदेव, आदिश्वर, युगादिदेव, प्रथमराजेश्वर, आदिजिन, आदर्श पुरुष, आदीश इत्यादि नाम से भी जाना जाता है। इस युग के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ही थे किंतु पिछले युग के अंतिम तीर्थंकर भगवान सम्प्रत्ति थे। भगवान सम्प्रत्ति उस युग के अंतिम (चौबीसवें) तीर्थंकर थे । भगवान आदिनाथ का वर्ण- क्षत्रिय (इश्वाकू वंश) था ।उनकी देहवर्ण- स्वर्ण रंग (नारंगी-पीला) थी। लंबाई/ ऊंचाई- 500 तीर के बराबर/ 4920 फीट/ 1500 मीटर थी। उनकी आयु- 84 लाख वर्ष पूर्व थी। आदिनाथ को इस युग के निर्माता के रूप में जाना जाता हैं।इनसे पहले मनुष्य कोई काम नही करते थे अर्थात पढ़ना-लिखना, खेती, व्यापार इत्यादि किसी भी चीज का प्रावधान नही था। उस समय मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्पवृक्ष से पूरी हो जाया करती थी लेकिन धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गयी। भोगभूमि की रचना मिट चुकी थी और कर्मभूमि की रचना प्रारंभ हो रही थी। उस समय वर्षा होने से खेतों में अपने आप तरह-तरह के धन्य के अंकुर उत्पन्न होकर समय पर योग्य फल देने वाले हो गए थे ।इस प्रकार उस समय यद्यपि भोग उपयोग की समस्त सामग्री मौजूद थी, परंतु उस समय की प्रजा उसे काम में लाना नहीं जानती थी; इसलिए वह उसे देखकर भ्रम में पड़ गई थी। अब तक भोग भूमि बिल्कुल मिट चुकी थी और कर्म युग का प्रारंभ हो गया था पर तुम लोग कर्म करना जानते नहीं थे इसलिए वे भूख प्यास से दुखी होने लगे ।इसके बाद भगवान आदिनाथ ने ही मनुष्य को आवश्यक ज्ञान दिया। उन्होंने मनुष्य को जीवन जीने के लिए छह काम सिखाये थे -

असि- रक्षा करने के लिए अर्थात सैनिक कर्म
मसि- लिखने का कार्य अर्थात लेखन
कृषि- खेती करना और अन्न उगाना
विद्या- ज्ञान प्राप्त करने से संबंधित कर्म
वाणिज्य- व्यापार से संबंधित
शिल्प- मूर्तियों, नक्काशियों, भवनों इत्यादि का निर्माण।

कहने का तात्पर्य यह हुआ कि भगवान आदिनाथ ने ही लोगों को सुनियोजित तरीके से भवन निर्माण करना, नगर बसाना, खेती करके अन्न उगाना और उससे भोजन करना, शिक्षा प्राप्त करना और उससे समाज में नियमों की स्थापना करना, व्यापार करके उन्नति करना और पैसे कमाना, अपनी या अपने परिवार या देश की रक्षा करना तथा इन सभी को लिपिबद्ध करना इत्यादि सिखाया। इसी तरह अपनी सुपुत्रियों ब्राह्मी को लिपि विद्या एवं सुंदरी को अंक विद्या का ज्ञान कराकर, इन विद्याओं को प्रसारित करवाया ।इस तरह से मनुष्य को मूलभूत चीजों को सिखाने का श्रेय भगवान आदिनाथ को जाता है। उन्होंने प्रथम बार अपनी नगरी अयोध्या में शासन-व्यवस्था, नियम-सिद्धांत, अधिकार-कर्तव्य इत्यादि की स्थापना की थी। इसके बाद सब कुछ नियमों के अनुसार चलने लगा था तथा धर्म की स्थापना हुई थी।

एक बार हिंदू देवता व स्वर्ग के राजा इंद्र देव आदिनाथ की सभा में आये हुए थे। तब वे दोनों नृतकियों का नृत्य देख रहे थे। उसी समय नीलांजना नामक एक नृतकी की आयु पूरी हो गयी और उसकी मृत्यु हो गयी। यह देखकर भगवान आदिनाथ को मृत्यु के दुखद सत्य का ज्ञान हुआ। उन्होंने उसी समय सांसारिक मोह-माया, राजपाठ इत्यादि त्याग कर सन्यासी बन जाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र भरत को सौंप दिया और बाकि के पुत्रों में राज्य का भाग बाँट कर सिद्धार्थ नगर चले गए। वहां जाकर उन्होंने वस्त्रों का त्याग किया और नग्न अवस्था में आ गए। अब ऋषभनाथ पूरी तरह से मुनि बन चुके थे। ऋषभदेव जी के त्याग को देखते हुए उनके साथ कई राजा व प्रजा के लोग भी आये थे जिन्होंने सन्यास ले लिया था। इसमें उनके पुत्र व प्रपोत्र भी थे। चूँकि वह पहले तीर्थंकर थे, इसलिए लोगों को यह नहीं पता था कि उन्हें आहार में क्या दें एवं किस विधि से दे, इसलिए वे उन्हें आभूषण, हीरे-मोती इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएं दिया करते थे, ना कि भोजन। इससे उनके साथ के लोगों में व्याकुलता होने लगी और वे भूख-प्यास से बेहाल होने लगे। तब उनमे से कईयों ने जैन धर्म में से कई अन्य मतों/ संप्रदायों की शुरूआत की थी। इसी तरह भगवान आदिनाथ को बिना भोजन रहते हुए 13 माह से ऊपर हो गए थे। एक दिन वे भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे जहाँ उनके प्रपोत्र श्रेयांश ने उन्हें विधि पूर्वक इक्षुजल (मीठा पानी) पीने को दिया। उन्होंने लगभग 1 वर्ष बाद कुछ ग्रहण किया था, इसलिए इस दिन का महत्व बढ़ गया। यह दिन हिंदू कैलेंडर के अनुसार वैशाख माह की शुक्ल तृतीया थी जिसे आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता हैं। इस दिन का जैन धर्म में बहुत महत्व है। इसके पश्चात भगवान आदिनाथ ने लगभग एक हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। अंत में फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को प्रयागराज के पुर्वतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहाँ पर कैवल्य ज्ञान से अर्थ भूत, वर्तमान व भविष्य का संपूर्ण ज्ञान प्राप्ति से है। इसके बाद इंद्र देव व बाकि देवताओं ने मिलकर भगवान आदिनाथ के उपदेश देने के लिए समवशरण की स्थापना की थी। इसमें वे देवताओं, मनुष्यों, मुनियों, तियंचो इत्यादि को धर्म का उपदेश दिया करते थे। मान्यता के अनुसार भगवान आदिनाथ के 84 गणधर, 84 हजार मुनि (साधू या जैन भिक्षु, पुरुष) तथा 3.5 लाख के आसपास साध्वियां (जैन भिक्षु, महिला) थी। केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात आदिनाथ तीर्थंकर के रूप में 99 हजार वर्ष तक पृथ्वी पर रहे और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। जब उनकी मृत्यु के 14 दिन शेष रह गए थे तब वे अष्टपद पर्वत (कैलाश पर्वत) चले गए थे। अंत में उन्होंने माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन निर्माण/ मोक्ष को प्राप्त कर संसार के आवागमन से मुक्त हो गए ।इस दिन को जैन धर्म में भगवान आदिनाथ के निवाणोत्सव या मोक्ष प्राप्ति के रूप में मनाया जाता है। उनके साथ ही उनके कई भक्तों/ मुनियों ने समाधि ले ली थी तथा मोक्ष को प्राप्त किया था। इसके पश्चात स्वयं इंद्र देव सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत आये थे और भगवान आदिनाथ के शरीर (नख और बाल) का अंतिम संस्कार किया था। उसके कुछ वर्षों में तृतीय काल का अंत हो गया था तथा जैन धर्म का चतुर्थ काल शुरू हुआ था। हिंदू धर्म के कई ग्रंथों में ऋषभदेव या आदिनाथ जी के नाम का उल्लेख मिलता हैं। महापुराण में उन्हें भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार बताया गया हैं। सर्वप्रसिद्ध भागवतपुराण में भी लिखा गया है कि जैन धर्म के संस्थापक ऋषभ देव जी थे। उन्हें एक महान ऋषि व तपस्वी की संज्ञा दी गयी है। आइए हम आज के दिन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का ज्ञान एवं नियमानुसार एवं व्यवस्थित जीवन यापन के ज्ञान प्रदाता प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को याद करे ।

संकलन: भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर ।

स्वस्थ व चिकित्सा शिविर का आज थूवोनजी में आयोजन

सिद्धचक्र महा मंडल विधान का हुआ समापन। विश्व शांति महायज्ञ में दी आहुतियां

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

जिला मुख्यालय से तीस किलोमीटर दूर अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी में थूवोनजी के खड़े बाबा भगवान आदिनाथ स्वामी की जन्म जयंती पर स्वस्थ व चिकित्सा शिविर का आयोजित गुरुवार को दोपहर किया जा रहा है जिसमें जिला चिकित्सालय के प्रमुख नीरज कुमार छारी जिले की लाइफ लाइन कहें जाने वाले डॉ डी के जैन अन्य प्रमुख चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगे थूवोनजी कमेटी के प्रचार मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि युग के आदि में डूबती मानवता को बचाने वाला जगत को असी,मसी, कृषि, शिल्प, कला और वाणिज्य का उपदेश देकर व्यवस्थित जीवन जीने का मार्ग वताने वाले अहिंसा धर्म के प्रणेता जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदि पुरुष, आदि ब्रह्मा, आदिश्वर आदिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक श्री दिगंबर जैन दर्शनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र थूबोनजी में बड़े भक्ति भाव के साथ परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद से विभिन्न कार्यक्रम के साथ भक्ति भाव से मनाया जायेगा । गुरुवार मंडल के संयोजक में किया जायेगा ।

चिकित्सकों की टीम में ये डाक्टर होंगे सम्मिलित

कमेटी के महामंत्री विपिन सिंघाई ने बताया कि दोपहर में प्रारंभ होने वाले स्वस्थ व चिकित्सक शिविर में डॉ नीरज कुमार छारी (मुख्य चिकित्सा अधिकारी) जिला अस्पताल अशोक नगर डॉ डी के जैन (हृदय रोग विशेषज्ञ), डॉ नीतेश जैन शिशुरोग विशेषज्ञ) डॉ दीप्ति सुरना (स्त्री रोग विशेषज्ञ), डॉ अंकुर तारई डॉ मनोज जैन डॉ सुगन चन्द्र जी डा संदीप जैन डॉ पंकज जैन डॉ दीपक जैन डॉ एस के पाटनी डॉ पंकज जैन अमरोद डॉ मोनू जैन डॉ रचना टडैया, चिकित्सा सहयोगी हेमंत टडैया , दिनेश गुप्ता स्वस्थ शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान करेंगी।

निःशुल्क बस की होगी व्यवस्था

सोलह मार्च को दो बसो की निःशुल्क सुबह बजे गंज मन्दिर से की गई है जन्म कल्याणक महोत्सव के वाद भोजन व मिष्ठान वितरण कमेटी द्वारा किया जाएगा कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टिंगू मिल उपाध्यक्ष गिरिश जैन,राकेश अमरोद , धर्मेन्द्र रोकड़िया, महामंत्री विपिन सिंघाई, मंत्री विनोद मोदी, राजेन्द्र हलवाई, रानी पिपरई, कोषाध्यक्ष सौरव वाझल, प्रचार मंत्री विजय धुर्रा, मिडिया प्रभारी अरविंद जैन, आडिटर राजीवचन्देरी ने सभी से समारोह में शामिल होने का निवेदन किया है।

विश्व शांति महायज्ञ में सवा लाख मंत्रों से दी आहुतियां

अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी में रूपचन्द्र धनकुमार मनीष कुमार आलोक कुमार रानीपुर परिवार के पुण्यार्यजन में चल रहे श्री सिद्धचक्र महा मंडल विधान का समापन सवा लाख मंत्रों की आहुतियां के साथ हो गया इस दौरान भगवान की महा आराधना के साथ अर्घो का समर्पण किया गया।

आचार्य प्रज्ञ सागर जी महाराज ने कहा...

पत्रकार जन-जन तक पहुंचाएं महावीर के संदेश

नई दिल्ली

परम पूज्य परमम्पराचार्य श्री प्रज्ञ सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में 14 मार्च को दोपहर 3:00 बजे लोधी एस्टेट दिल्ली में जैन पत्रकार महासंघ के तत्वावधान में भगवान महावीर के 2550 में निर्वाण महोत्सव के संबंध में पत्रकार वार्ता हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि 2550 वॉ महावीर निर्वाण महोत्सव दीपावली 2023 से दीपावली 2024 तक अनेकों भव्य कार्यक्रम के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा है, भगवान महावीर के संदेश जन-जन तक पहुंचाने का कार्य देश के पत्रकार ही कर सकते हैं और पत्रकारों को यह कार्य करना चाहिए , कोई भी कार्यक्रम हो और उसकी प्रभावना होना आवश्यक है। उपदेशों की प्रभावना ही भक्ति है, आचार्य श्री ने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाया जाए तो विश्व शांति होगी उन्होंने पत्रकारों के हित में बोलते हुए कहा कि जैन समाज को अपने संपादक, पत्रकार बंधुओं को आर्थिक सहयोग करना चाहिए, बड़े-बड़े कार्यक्रमों में से एक

अंश पत्रकारों का भी रखना चाहिए, वरिष्ठ पत्रकारों के नाम से उनकी स्मृति में पत्रकार पुरस्कार, अवार्ड जो अच्छा कार्य कर रहे हैं उनको प्रदान कर पत्रकारों को प्रोत्साहन करने हेतु सम्मान करना चाहिए। आगामी समय में विशाल पत्रकार सम्मेलन के लिए तैयारी प्रारंभ कर देनी चाहिए। आचार्य श्री ने सभी उपस्थित पत्रकार एवं श्रेष्ठियों को आशीर्वाद प्रदान किया। उपरोक्त वार्ता में जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया ,राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर ने महासंघ की कार्य योजनाओं , किये जा रहे कार्यक्रमों के व संगठन के संबंध में अवगत कराया।

आर्यिका श्री सरस्वती माताजी का मंगल प्रवेश

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। आचार्य देशभूषण महाराज की शिष्या आर्यिका सरस्वती माताजी का बुधवार सायं नगर में मंगल प्रवेश हुआ। आर्यिका सरस्वती माताजी अपनी संघस्थ आर्यिका अनन्तमति माताजी व महोत्सवमति माताजी के साथ बुधवार को अपरान्ह ग्राम बीर से विहार कर सायं नसीराबाद पहुंची। जहां बस स्टैंड पर उनका जैन समाज की ओर से स्वागत किया गया। बाद में उन्हें ढोल-ढमाकों के साथ जुलूस के रूप में मुख्य बाजार स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर लाया गया।

वेद ज्ञान

जीवन और आस्था...

आस्था के फूल हृदय की पवित्रता रूपी क्यारी में उगे मनोहारी पौधे पर ही खिल सकते हैं। वही आस्था लक्ष्य को पाने में समर्थ हो सकती है जिसकी जड़ें मौलिकता की खाद से उर्वरा शक्ति पाती हैं। मन के मैलेपन से विकसित और पनपी प्रवृत्ति व्यक्ति को किसी भी मुकाम पर छोड़ देने के लिए विवश हो सकती है। आस्था भक्ति, प्रेम, अपनत्व व आनंद की आधारशिला है। आस्था के पवित्र सरोवर में खिले भावकमल ही प्रभुकृपा का उत्तम प्रसाद पाने के एकमात्र अधिकारी हैं। आस्था की दृढ़ता अपने और अपने आराध्य के मध्य मिलन की दूरी व खाई को पाट देती है। आस्था अपने मंतव्य, गंतव्य व आराध्य को पाने की वह जादुई डोरी है जिसकी शक्ति, भक्ति व सामर्थ्य से प्रभु, प्रेमी व लक्ष्य स्वयं ही उसकी ओर आकर्षित होते चले आते हैं। पक्के और दृढ़ इरादों से विरचित आस्था के मंसूबे धारक को उसकी मनोकामनाओं की अंतिम मंजिल तक पहुंचाने की गारंटी देते हैं। आस्था अपने साथ विश्वास, नैतिकता, मूल्य व जीवटता को लेकर चलती है। आस्था भटकते राहगीरों और जीवन सागर में दिशाहीन होकर क्रूर समय के थपेड़े खाते मानव व जीव समुदाय को सही राह दिखाती है। आस्था के बगैर कोई भी व्यक्ति जीवन लक्ष्य में आनंद पाने की कल्पना नहीं कर सकता। आस्था सतोगुणी मूल्यवान सृष्टि की रचना करती है जिसका उद्देश्य विशुद्ध रूप से आराधना में पवित्रता के साथ-साथ जीवन को एक उत्तम उद्देश्य के लिए प्रेरित करना होता है। आस्था की प्रबलता प्रभु की अपने प्रति करुणा और प्रीति के बढ़ने की द्योतक होती है। उत्साह भी आस्था की ही आत्मजा है जो इससे प्रेरणा पाकर प्रभु मिलन व उनके साक्षात्कार में सहायक होती है। आस्था पवित्र भावों की वह मंदाकिनी है जिसमें स्नान करने के लिए देवगण स्वयं ही उत्कंठित रहते हैं। आस्था ही भक्ति व भक्त का कवच है। पावन आस्था की ही परिणति है कि प्रभु राम व माता सीता सदैव अपने भक्त पवनपुत्र हनुमान के हृदय में ही विराजमान रहते हैं। आस्था भक्त के पास ईश्वरीय अनुकंपा की अमोघ शक्ति है जिससे वह किसी भी पावन जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो सकता है। जीवन के अनमोल वैभवों को पाने और आत्मिक व असली आनंद प्राप्ति का मूल मंत्र आस्था है।

संपादकीय

बेहद अहम दौर में है भारत और ऑस्ट्रेलिया का रिश्ता

भारत और आस्ट्रेलिया के बीच कूटनीतिक संबंध पहले से ही सहज रहे हैं, लेकिन मौजूदा दौर में तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में दोनों देशों ने जैसे सरोकार दिखाए हैं, वे कई लिहाज से अहम हैं। चीन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में जैसी दखल दी है और खासकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसके आक्रामक रुख के चलते पड़ोसी और सीमा से सटा देश होने के नाते भारत में जैसी चिंता पैदा की है, उसके मद्देनजर स्वाभाविक ही भारत को अपने हर मोर्चे पर मजबूत विकल्प खड़े करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की जरूरत महसूस हो रही है। आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज की ताजा भारत यात्रा और इस दौरान आपसी सहयोग की दिशा में बढ़े कदम को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। गौरतलब है कि इस दौरान रक्षा संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के साथ-साथ भारत और आस्ट्रेलिया के बीच व्यापक आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते को जल्द से जल्द पूरा करने पर सहमति बनी।

उम्मीद जताई गई है कि इस साल के पूरा होते-होते समझौते को अंतिम स्वरूप दे दिया जाएगा। दरअसल, पिछले साल ही भारत और आस्ट्रेलिया के बीच आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे और उसी को अब जमीनी स्तर पर उतारने के लिए तेजी से काम चल रहा है। आस्ट्रेलिया भारत को मुख्य रूप से कच्चे माल का निर्यात करता है, जबकि भारत से वह परिष्कृत वस्तुओं का आयात करता है। यही स्थिति दोनों देशों के लिए अनुकूल और फायदेमंद अवसरों का निर्माण करती है। इसी क्रम में द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग को दोनों देशों के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी के एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखा गया है। पिछले कुछ सालों के दौरान रक्षा क्षेत्र में हुए उल्लेखनीय समझौते के तहत एक-दूसरे की सेनाओं के लिए साजो-सामान के समर्थन से लेकर सुरक्षा एजंसियों के बीच नियमित और उपयोगी सूचनाओं का आदान-प्रदान होता रहा है। अब उस तंत्र को और मजबूत करने पर बात बढ़ी है। आतंकवाद और आतंकी संगठनों के खिलाफ साझा और ठोस लड़ाई पर बनी सहमति को वक्त का तकाजा कहा जा सकता है। साथ ही दोनों पक्षों ने खेल, नवाचार, दृश्य-श्रव्य उत्पादन और सौर उर्जा के क्षेत्रों में आपसी सहयोग के लिए चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए। अल्बनीज की यात्रा के दौरान एक अहम बिंदु यह भी रहा कि भारत के प्रधानमंत्री ने उनके सामने आस्ट्रेलिया में पिछले दिनों कुछ मंदिरों पर हमलों को लेकर आपत्ति दर्ज कराई। जब दो देशों के बीच सहयोग का विस्तार होता है, तो उसमें सांस्कृतिक स्तर पर एक-दूसरे का खयाल रखना जरूरी पक्ष होता है। यही वजह है कि आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि धार्मिक स्थलों पर हमलों के लिए जिम्मेदार किसी भी व्यक्ति को कानूनी सख्ती का सामना करना पड़ेगा। भारत और आस्ट्रेलिया अगर सुरक्षा सहित हर मोर्चे पर आपसी सहयोग के तंत्र को व्यापक बनाने की कोशिश कर रहे हैं तो इसका असर चीन की कूटनीति पर भी पड़ेगा। यह किसी से छिपा नहीं है कि चीन भारतीय सीमा में अक्सर नाहक दखल देता और जानबूझ कर विवाद पैदा करने की कोशिश करता रहा है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

महिला आरक्षण

एक बार फिर महिला आरक्षण कानून बनाने की मांग उठ रही है। करीब सत्ताईस साल से यह विधेयक लटका हुआ है। इसे लेकर प्रायः विपक्षी दल ही सक्रिय देखे जाते हैं। हालांकि कुछेक मौकों पर संसद में इसे पारित कराने की कोशिश की गई, मगर तब विपक्षी दलों की तरफ से ही कुछ ऐसे बिंदु रेखांकित कर दिए गए, जिन पर सहमति नहीं बन पाई और वह फिर ठंडे बस्ते के हवाले हो गया। इस बार इस मांग की अगुआई तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव की बेटी और भारत राष्ट्र समिति की नेता के कविता कर रही हैं। उन्होंने इसे लेकर एक दिन की भूख हड़ताल भी की। उनके समर्थन में तमाम विपक्षी दल आए। यह अजीब संयोग है या फिर सोची-समझी रणनीति के तहत तय किया गया समय है कि जिस दिन प्रवर्तन निदेशालय ने उन्हें कथित आबकारी नीति घोटाले में पूछताछ के लिए बुलाया था, वही दिन उन्होंने भूख हड़ताल के लिए चुना था। प्रवर्तन निदेशालय ने उनसे पूछताछ का समय एक दिन आगे बढ़ा दिया। दरअसल, ऐसी हड़तालें और किसी मसले को लेकर किए जाने वाले आंदोलन अब नेताओं के लिए अपना चेहरा चमकाने का अवसर बनते गए हैं। के कविता ने भी इसे एक अवसर के रूप में चुना, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करने की मांग पुरानी है। इससे संबंधित विधेयक भी तैयार किया गया था, मगर उस पर आम सहमति न बन पाने की वजह से वह कानून का रूप नहीं ले सका है। हालांकि यह मामला इतना सीधा है भी नहीं। उसमें विभिन्न वर्गों और समुदायों आदि की महिलाओं को जगह दिलाना सबसे बड़ी चुनौती है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि कहीं इस आरक्षण का लाभ केवल कुछ संपन्न और प्रभुत्वशाली तबके की महिलाएं ही न उठाती रहें। सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और समाज के हाशिये पर रह रही महिलाओं को शासन की मुख्यधारा से कैसे जोड़ा जाए, यह एक पेचीदा काम है। इसलिए यह सुझाव भी दिया गया कि अगर राजनीतिक दल खुद नेतृत्व में महिलाओं को जगह देना शुरू कर दें, तो आरक्षण की दरकार ही नहीं रह जाएगी। मगर हकीकत यह है कि बेशक सैद्धांतिक रूप से सभी महिला आरक्षण की बात करते हैं, पर शायद ही कोई राजनीतिक दल है, जिसके नेतृत्व की अगली कतार में एक तिहाई महिलाएं हैं। कार्यकर्ता के रूप में भले महिलाएं दिख जाएं, पर दलों के अंदरूनी नेतृत्व में उन्हें अहम जिम्मेदारियां कम ही दी जाती हैं। यही हाल चुनाव जीतने के बाद मंत्री पद के बंटवारे में भी देखा जाता है। निस्संदेह सत्ता में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। मगर यह केवल सैद्धांतिक तौर पर एकजुटता जाहिर करने से नहीं होगा, खुद राजनीतिक दलों को इसे व्यवहार में उतारना होगा। के कविता को इसे अपनी पार्टी के स्तर पर भी उतारना होगा, तभी विश्वास बनेगा। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के समय कांग्रेस ने पचास फीसद सीटों पर महिला उम्मीदवार उतारने का फार्मूला बनाया था, मगर चुनाव के बाद पार्टी नेतृत्व के स्तर पर वहां भी यह सिद्धांत लागू नहीं दिखाई देता। अपने ऊपर लगे अनियमितता के आरोपों से ध्यान भटकाने के मकसद से अगर के कविता ने यह मुद्दा एक बार फिर से उठाया और इस बहाने विपक्षी दलों को अपने साथ जोड़ने का प्रयास किया है, तो इससे उन्हें कुछ हासिल नहीं होगा।

तीर्थंकर ऋषभदेव जन्म कल्याणक 16 मार्च 2023 पर विशेष

संस्कृति के आद्य प्रणेता तीर्थंकर ऋषभदेव

शाबाश इंडिया

प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी को तीर्थंकर ऋषभदेव जन्मकल्याणक जैन समुदाय में हर्ष, उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है। इस दिन प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था। राजा नाभिराय और उनकी पत्नी रानी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में राजघराने में हुआ था। इन्द्रों ने बालक का सुमेरू पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके 'ऋषभ' यह नाम रखा। जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की शृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने,
गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिए इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिए अनिवार्य होती हैं। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैनधर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है। नवीं शती के आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन चरित्र का विस्तार से वर्णन है । भारतीय संस्कृति के इतिहास में ऋषभदेव ही एक ऐसे आराध्यदेव हैं जिसे वैदिक संस्कृति तथा श्रमण संस्कृति में समान महत्व प्राप्त है। यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड अजनाभवर्ष भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय के नाम से प्रसिद्ध था। जैनधर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिए उज्जवल प्रकाश हैं। उन्होंने कर्मों पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है। सामाजिक संरचना में उन्होंने प्रजाजनों केा श्रेणियों में विभाजित करते हुए उनको अपने- अपने कर्तव्य अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया। सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया। प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिए आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुए स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया ।उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है- 1.असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि- खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4.विद्या- पढना, लिखना, 5. वाणिज्य-व्यापार, वाणिज्य, 6.शिल्प- सभी प्रकार के कलाकारी कार्य। जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया। कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर नव बंसत खिल उठा। जनता ने अपना स्वामी उन्हें माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ। ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया।लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया। ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरस्कृत किया। आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरणशास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतो ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है। आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ का अभियान चला रही है, ऐसी में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उनके द्वारा दी गयी बेटियों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगे। प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक,

श्री 1008 आदिनाथ भगवान, ज्ञान तीर्थ मुरैना

किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुर्पुद किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया। तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं। उनके पुत्र भरत और बाहुबली का कथन इस तथ्य का प्रमाण है कि संसारी व्यक्ति कितना रागी-द्वेषी रहता है, जो अपने सहोदर के भी अधिकार को स्वीकार नहीं कर पाता। दोनों भाईयों के बीच हुआ युद्ध हर परिवार के युद्ध का प्रतिबिम्ब है। बाहुबली का स्वाभिमान हर व्यक्ति के स्वाभिमान का दिग्दर्शक है। निरासक्त व्यक्ति की यह आध्यात्मिक दृष्टि है। तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जीवन शैली, दर्शन एवं आर्दशों का प्रचार-प्रसार भारतीय युवा पीढ़ी के लिए और भी अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से इनमें भौतिकवादी विचारों एवं आदर्शों को आगे ले जाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है जिसे पुरजोर प्रयास से साथे रोकना अनिवार्य है। पाश्चात्य सभ्यता का यह मार्ग निःसंदेह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से काफी भिन्न है और संभवतः हमारे मानवीय मूल्यों के विपरीत भी है। आज मानवता के सम्मुख भौतिकवादी चुनौतियों के कारण नाना प्रकार के सामाजिक एवं मानसिक तनाव तथा संकट व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भूमण्डल स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। भगवान ऋषभदेव द्वारा बताई गई जीवन शैली की हमारी सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में काफी प्रासंगिकता एवं महत्ता है। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियां मिलती हैं जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत तथा शिक्षाएं आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और उपयोगी हैं तथा भविष्य के विश्व संस्कृति के लिए आधार हैं।

भारतीय संस्कृति के इतिहास में ऋषभदेव ही एक ऐसे आराध्यदेव हैं जिसे वैदिक संस्कृति तथा श्रमण संस्कृति में समान महत्व प्राप्त है।

साधु-संतों के जीवन में ठहराव नहीं होता: आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी

मुरार (ग्वालियर) के लिए हुआ विहार

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरेना। सन्त महात्माओं की जिंदगी में ठहराव तो होता ही नहीं हैं । खासकर जैन साधुओं की जिंदगी में । जैन साधु साध्वी कभी भी विना किसी विशेष कारण के एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं ठहरते । जैन साधु-साध्वी यदि किसी मन्दिर या मठ का निर्माण कराते हैं तो वह परमार्थ के लिए कराते हैं । वह कभी भी अपने लिए मन्दिर, मठ या धर्मशाला का निर्माण नहीं कराते। साधु-संतों का कोई घर द्वार नहीं होता। किसी ने कहा भी है ''बहता पानी, रमता जोगी''। जैन साधु-साध्वियां सदैव पद विहार करते हुए विभिन्न स्थानों पर धर्म प्रभावना करते हैं।इसी कारण अब हमें भी आगे की ओर विहार करना होगा । स्थानीय समाज बहुत ही समझदार और ज्ञानवान हैं । मुरेना धर्म नगरी के साथ साथ वाकई में संस्कारधानी हैं । यहां के महिला, पुरुष, युवा एवं बच्चे सभी धार्मिक कार्यो में रुचि रखते हुए साधु संतों, आर्यिकाओं की चर्या में संलग्न रहते हैं। मैंने ज्ञानतीर्थ पंचकल्याणक से आजतक जो भी आपको धर्मोपदेश दिए हैं, उनका अनुसरण करते हुए उन्हें अपने चरित्र में समाहित करने का प्रयास करना, यही मेरा सबको आशीर्वाद है। उक्त धर्मोपदेश जैन साध्वी गुरुमां श्री स्वस्तिभूषण माताजी ने मुरेना से मुरार विहार के दौरान ऋषभ इंटर प्राइजेज पर धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। पूज्य गुरुमां ज्ञानतीर्थ जैन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के निमित्त स्वस्तिधाम जहाजपुर से मुरेना पधारी थी । आपके निर्देशन में श्री मज्जिनेन्द्र पँचकल्याक प्रतिष्ठा महोत्सव ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ । आपने अल्प प्रवास में मुरेना समाज को अनेकों सौगातें प्रदान कीं। आपकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से जैन बगीची में मां स्वस्ति इंटर नेशनल स्कूल एवं नसियां जी जैन मंदिर में सन्त निवास की आधार शिला रखी गई। बड़े जैन मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा, शिखर कलशारोहण, सामान्य ज्ञान परीक्षा जैसे भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसी दरम्यान मुरेना नगर में प्रथमवार 125 मंडलीय श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रातःकालीन वेला में आर्यिका संघ ने मुरार के लिए विहार किया तो सभी की आँखे भर आईं । सभी लोग गुरुमां से अभी और रुकने का आग्रह कर रहे थे । विहार के समय सैकड़ो की संख्या में पुरुष, महिलाएं, युवा माताजी के साथ हाथों में ध्वजा लेकर पैदल चल रहे थे। आज की आहारचर्या जैन मंदिर बानमोर में होगी। मुरार से सर्वश्री योगेश जैन खोआ, अशोक पोली, सुभाष नेताजी, मनिंदर, तन्नू, आशीष, अंकुश, दीपू, मनोज, पुष्पेंद्र, रवि, रजत, अर्पित, लाला, राजू, विकास सहित अनेकों युवा साथी विहार में सम्मिलित हुए ।

राज्यपाल को 'राजस्थान हस्तशिल्प कलाएं' एवं 'दी हैंडीक्राफ्ट्स ऑफ राजस्थान' पुस्तकों की प्रथम प्रतियां भेंट

जयपुर. कासं। राज्यपाल कलराज मिश्र को राजभवन में बुधवार को सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान हस्तशिल्प कलाएं' एवं उसका अंग्रेजी अनुवाद 'दी हैंडीक्राफ्ट्स ऑफ राजस्थान' की प्रथम प्रतियां भेंट की।

!! श्रद्धांजलि !!

संस्कृति युवा संस्था के प्रधान संरक्षक एवं
करणी सेना के संस्थापक

श्री लोकेंद्र सिंह कालवी

के देवलोक गमन पर

शत्-शत् नमन

-: श्रद्धावनत :-

पंडित सुरेश मिश्रा

एडवोकेट एच सी गणेशिया, दिनेश शर्मा, गोविंद पारीक, सुनील जैन,
श्रीमती चित्रा गोयल, गौरव धामाणी एवं संस्कृति युवा संस्था

अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर सेन्ट्रल
एवं
लॉयंस क्लब जयपुर डायमंड
के संयुक्त तत्वावधान में होली मिलन समारोह के अवसर पर
manipalhospitals
LIFE'S ON
के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम
हास्य व्यंग्य
कवि सम्मेलन
दिनांक: 26 मार्च, 2023 (रविवार) • समय: सायं 5.00 बजे से
स्थान: 'उत्सव' पी–10, सेक्टर–2, विद्याधर नगर, जयपुर
अरूण जैमिनी
डॉ. विष्णु सक्सैना
विनीत चौहान
डॉ. सर्वेश अस्थाना (संचालन)
अजय अंजाम
योगिता चौहान
श्वेता सिंह
Powered by: cityvibes Premium Ethnic Menswear
Supported by: Wordfence
अध्यक्षता
डॉ. नरेश मेहता
शासनसेवी
मुख्य ट्रस्टी
गुलाब कौशल्या चैरिटेबल ट्रस्ट
विशिष्ट अतिथि
कालीचरण सर्राफ
विधायक, मालवीय नगर
अशोक लाहोटी
विधायक, सांगानेर
पुनीत कर्नावट
उप महापौर, जयपुर ग्रेटर
मोहन लाल गुप्ता
पूर्व विधायक
सीताराम मंगला
सी.एम.डी. मंगला सरिया
विशेष अतिथि
अशोक अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, IVF
रंजन ठाकुर
निदेशक
मनीपाल हॉस्पिटल
सम्मानित अतिथिगण
एन.के. गुप्ता
अध्यक्ष, RVF
ध्रुवदास अग्रवाल
प्रभारी, IVF राज.
गोविन्द अग्रवाल
वरिष्ठ
कार्यकारी अध्यक्ष, RVF
गोपाल गुप्ता
महासचिव, IVF राज.
ज्योति खण्डेलवाल
अध्यक्ष, IVF
महिला विंग, राज.
जे.डी. माहेश्वरी
अध्यक्ष, IVF
युवा विंग, राज.
मुख्य समन्वयक
सीए शरद काबरा
सायं 5.00 से 5.30 बजे – रजिस्ट्रेशन एवं हाई–टी
सायं 5.30 – स्वागत, चार्टर–डे सेलिब्रेशन एवं कवि सम्मेलन
रात्रि 9.30 बजे – रात्रि भोजन
समन्वयक :
विनीत जैन • संजीव घीया • कैलाश अग्रवाल
रमेश खण्डेलवाल • लॉयन नवीन सारस्वत • लॉयन सीए अशोक जिन्दल
लॉयन ए.एस. भटनागर • लॉयन रघुवीर सिंह शेखावत
रोटे. सुधीर जैन गोधा
अध्यक्ष
सीए संजय पाबूवाल
महासचिव
अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर सेन्ट्रल
विशेष आग्रह :
अनुराग दीक्षित
(मनीपाल हॉस्पिटल)
मंच संचालन:
प्रीति सक्सेना
लॉयन शंकर सिंह खंगारोत
अध्यक्ष
लॉयन अजय डोगरा
सचिव
लॉयंस क्लब जयपुर डायमंड
प्रवेश पत्र द्वारा ही प्रवेश दिया जायेगा।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से

जब मन अन्धा हो, तो आँखे भी काम नहीं करती...!

मैं देख रहा हूं कि आज की पीढ़ी को -- जिनकी ज़िन्दगी सोसियल मिडिया के व्यूज से चल रही है,, जिनकी सफलता इंस्टाग्राम, फेसबुक, वाट्सऐप, मैसेजिंग ऐप, मोबाइल और केमरे की क्वालिटी से नापी जा रही है - उनके लिए अजनबियों के वीडीओ से लेकर मन में उमड़ते घुमड़ते ख्याल तक, सब कुछ ऑनलाइन शेयर करना जरूरी हो गया है। क्योंकि आई एम समथिंग उनके लिये अपने हजारों फॉलोअर्स संग कुछ भी शेयर करना गर्व की बात हो सकती है। जब वो कुछ भी शेयर करते हैं तो उनके चेहरे पर जीत और आजादी की स्वतन्त्रता परिलक्षित होती है। मैं समझता हूं - सब कुछ शेयर करने की उत्कण्ठा उनके लिये घातक सिद्ध हो सकती है। क्योंकि अपना सारा अस्तित्व सार्वजनिक कर देना अच्छा नहीं है। खुद को दूसरों की नजरों से बचाकर रखना, (यानि हर जानकारी शेयर नहीं करना) वास्तव में अपने आपको ज्यादा आकर्षण बनाने में कारण बनेगा और फिर उसका आनंद देखिये। आज आकर्षण दिखने का नहीं -- - नहीं दिखने का ज्यादा है। इसलिए -- सबसे दूर रहो तो सबके करीब रहोगे.. अन्यथा ये दुनिया सच में - दो निया है।

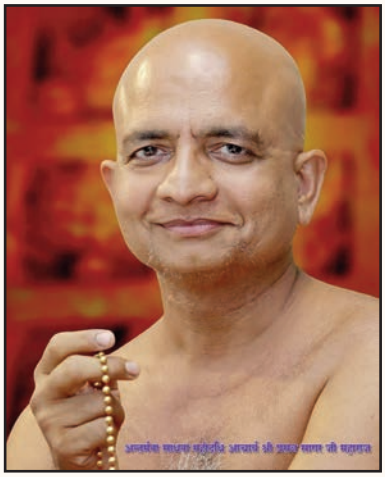

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

कामकाजी लड़कियां : ''परतंत्रता की भेंट ना चढ़ें''

शाबाश इंडिया

प्यार और शादी के प्रति कामकाजी लड़कियों का नजरिया थोड़ा अलग होता है। बाहर की दुनियाँ उन्हें प्रैक्टिकल बनाने को उकसाती है, लेकिन अंदरूनी तौर पर वे इमोशनल ही होती है और यह बात उन्हें उलझाती है। अपने घर परिवार को छोड़ने वाली कई लड़कियाँ आँखों में नए और अनबुझे सपने लेकर शहरों की ओर रुख करती हैं। यहाँ उनके लिए जिंदगी बिताना एक और मुश्किल होता है तो जीवन के कई नए पहलुओं से भी उनका साक्षात्कार होता है। कुछ साल पहले तक तो स्थिति काफी अलग थी पर अब बाजारीकरण के इस युग में स्थिति बदली है और बेहतरी के लिए बदली है। पढ़ाई में अव्वल आना, खुद का ध्यान रखना, भोजन का प्रबंध करना जैसे कई मुद्दों को अकेले झेलती इन लड़कियों के जीवन में कब प्यार का अंकुर सहज तौर पर फूट पड़ता है, खुद उन्हें नहीं पता चलता। सपनों को पूरा करने की कोशिश में सहपाठी के दोस्ताना व्यवहार को कई तो प्यार समझ कर भूल कर बैठती हैं। दरअसल उन्हें समझ नहीं आता है कि दोस्ती और प्यार के बीच की सीमा रेखा क्या है? लड़कियों को बचपन से यह करो! वह करो! मत करो! कहकर बंधन में रखा जाता है। ऐसे में अचानक शहरों में आ जाने पर उन्हें अकेला सा महसूस होता है। बसों की भीड़, सड़क पार करने में मुश्किल, बस में चढ़ते ही भीड़ के कारण उल्टी इन सब परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यह ही नहीं इन लड़कियों को लगता है कि यह हर पहलू से अन्य लड़कियों से कम है क्योंकि उनके ड्रेस को लेकर लोग फब्तियां कसते हैं उन्हें सीधे-सीधे बहन जी से संबोधित किया जाता है। बुरा तब ज्यादा लगने लगता है जब लड़कियाँ ही लड़कियों के साथ मिलकर ऐसे कमेंट करने लगती है। कई बार कुछ लड़के इसका फायदा उठाते हैं और कोने में सिमटी दुबकी लड़की से दोस्ताना व्यवहार बनाकर उसका लाभ उठाने की कोशिश करते हैं जैसा कि फिल्मों में दिखाया जाता है। इस से अच्छा है कि लड़कियाँ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दें और दोस्त बनाएं तो सोच समझकर। यह भी ना सोचे कि आप छिन्न भिन्न अलग-थलग होकर रह लेंगी और केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान देंगी, बल्कि आपका सामाजीकरण होना भी जरूरी है। प्यार जैसी कोमल भावना की वजह से कई बार वे स्वाभिमान से समझौता कर लेती हैं, जो बिल्कुल गलत है। फिर भी यदि कोई लड़की दोस्ती की रेखा को पार करके प्यार कर बैठती है और उसे प्यार में छलावा मिलता है तो लोक लाज के भय से चुप रहने की कतई जरूरत नहीं है। पहले यदि किसी लड़की के साथ कोई छलावा होता था या कोई परेशानी पैदा होती थी तो वह घुटकर रह जाती थी, लेकिन आज यदि किसी के साथ प्रेमप्रसंग में धोखा होता है, किसी तरह की छेड़खानी होती है तो उसे मुद्दे की तरह उठाना चाहिए। समाज जागरूक हो रहा है आज स्टडी सर्कल में लड़कियाँ और लड़के बराबरी से शामिल होते हैं उनमें दोस्ताना व्यवहार होता है। बिना मतलब की रूमानियत नहीं होनी चाहिए, बल्कि सकारात्मक विकास होना चाहिए। यह भी उतना ही सच है कि सपनों पर अंकुश लगाना सहज नहीं, यदि कोई लड़का पसंद है और वह उसे शादी भी करना चाहती है तो घर में बताएं। मां पापा को समझाएं कि सहपाठी इतनी जल्दी नौकरी कहां से कर सकता है? लड़की को खुद यह समझना चाहिए कि जिस तरह से नौकरी में प्रोबेशन पीरियड होता है, ठीक उसी तरह से प्रेम में भी प्रोबेशन पीरियड होता है। यदि लगता है कि पूरी जिंदगी उसके साथ बिताई जा सकती है तो ठीक है, वरना इंतजार करिए। बाहर रहने पर लड़कियाँ थोड़ी खुल जाती हैं, इस खुलेपन को सब को समझना चाहिए। फिर चाहे वह माँ-पिता हो या पति। हमारा समाज विकसित हुआ है, लड़कियाँ स्वतंत्र हुई है एक हद तक निर्णय लेने का अधिकार भी मिला है। प्यार और शादी जैसे मसलों पर परिपक्व सोच का परिचय देने से स्थितियां और भी बेहतर होंगी।

पूजा गुप्ताः मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

श्रद्धांजलि सभा

श्री लोकेंद्र सिंह कालवी

संस्कृति युवा संस्था के प्रधान संरक्षक एवम करणी सेना के संस्थापक श्री लोकेंद्र सिंह कालवी के देवलोक गमन पर शत शत नमन। जिनकी श्रद्धांजलि सभा 16.03.2023 को सांय 5 से 6 बजे तक, खंडाका हाउस, पीतल फैक्ट्री के पास, बनीपार्क, जयपुर पर होगी।

श्रद्धावनतः-

पंडित सुरेश मिश्रा,
एडवोकेट एच.सी गणेशिया, दिनेश शर्मा, गोविंद पारीक, सुनील जैन , श्रीमती चित्रा गोयल, गौरव धामाणी एवम संस्कृति युवा संस्था